निर्जला एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Nirjala Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 51, controlling revision 336432. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 51 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 51 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis; NHS — dehydration guidance, safety context checked 4 October 2026.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.51.1–64, Sanskrit Wikisource revision 336432, not a transcription of the original text.

प्रश्न, व्यास का उत्तर और भीम का भय

KATHA 6.51.1–10

युधिष्ठिर अपरा की महिमा सुनकर जनार्दन से ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी के बारे में पूछते हैं। कृष्ण सत्यवती-पुत्र व्यास को उत्तर देने वाला कहते हैं, जो शास्त्रों, वेद और वेदांग के ज्ञाता हैं। अंग्रेज़ी तुलना यहाँ वेदांग के बदले उपनिषद कहती है। युधिष्ठिर द्वैपायन से वैष्णव धर्म पूछते हैं, क्योंकि मानव और वासिष्ठ धर्म सुन चुके हैं। व्यास का अगला उत्तर मानव और वैदिक धर्म कहता है; अंग्रेज़ी तुलना उसमें भी वासिष्ठ रखती है। दोनों संस्कृत पदों को एक नहीं बनाया गया।

व्यास कलियुग में पहले बताए धर्म कठिन होने की बात कहकर पुराणों का सार, अल्प धन और क्लेश से बड़ा फल देने वाला उपाय बताते हैं। दोनों पक्षों की एकादशी में न खाने, द्वादशी को शुद्ध होकर फूलों से केशव की पूजा, विप्र का सम्मान और उनके साथ भोजन का वर्णन है। सूतक और अशौच में भी न खाने तथा स्वर्ग चाहने वालों के लिए जीवन भर व्रत की कठोर भाषा आती है। ये स्रोत के नियम हैं, जन्म या शोक में किसी से भोजन छुड़ाने की सलाह नहीं।

इकाई 9 में बुरे आचरण वाले भी एकादशी में न खाकर यम के निकट न जाने की प्रशंसा है। अंग्रेज़ी तुलना मेरे निकट आने का अलग कथन देती है; उसे चुपचाप नहीं लिया गया। यह सुनकर भीम अश्वत्थ-पत्ते की तरह काँपते हैं और गुरु को प्रणाम करके बोलते हैं। परलोक का भय धार्मिक कथानक है, किसी पाठक को धमकाने या स्वास्थ्य की जरूरत रोकने का आधार नहीं।

After hearing Apara's importance, Yudhishthira asks Janardana about Jyeshtha's bright Ekadashi. Krishna directs the answer to Satyavati's son Vyasa, learned in scriptures, Vedas and Vedangas; the English comparison substitutes Upanishads for Vedangas. Yudhishthira asks Dvaipayana for Vaishnava duties, having heard Manava and Vasishtha duties. Vyasa's reply instead says Manava and Vaidika; the English comparison again uses Vasishtha. These Sanskrit terms are not merged.

Calling the earlier duties difficult in Kali Yuga, Vyasa describes the Puranas' essence as a means bringing great fruit with little wealth or trouble. The account discusses not eating on both fortnights' Ekadashis, then purity, worship of Keshava with flowers, honouring a vipra and eating with them on Dwadashi. Strict language extends not eating to sutaka and ashaucha and speaks of lifelong observance for those seeking heaven. These are source rules, not advice to withhold food during birth-related circumstances or bereavement.

Unit 9 praises even wrongdoers who do not eat on Ekadashi as not approaching Yama. The English comparison instead says reaching my proximity; that different claim is not silently imported. Hearing this, Bhima trembles like an ashvattha leaf and salutes his teacher before speaking. Afterlife fear belongs to the religious account, not threats to readers or a reason to deny health needs.

भीम की भूख और एक उपाय का प्रश्न

KATHA 6.51.11–18

भीम पितामह से कहते हैं कि युधिष्ठिर, कुन्ती, द्रुपद-पुत्री द्रौपदी, अर्जुन, नकुल और सहदेव एकादशी में कभी नहीं खाते और उन्हें भी वृकोदर कहकर न खाने को कहते हैं। लेकिन उनकी भूख असहनीय है। वे विधिपूर्वक दान और केशव-पूजा करने को तैयार हैं। व्यास स्वर्ग चाहने और नरक से बचने के लिए दोनों पक्षों की एकादशी में न खाने का कथन दोहराते हैं।

भीम कहते हैं कि वे एक बार भोजन पर भी नहीं रह सकते, फिर उपवास कैसे करें। पेट की अग्नि का नाम वृक बताते हैं, जो बहुत खाने से ही शांत होती है। संस्कृत अतिवेलम् को यहाँ बहुत खाना रखा गया है; अंग्रेज़ी तुलना कई बार खाना कहती है। अग्नि का यह पौराणिक वर्णन आधुनिक शारीरिक रोग का निदान नहीं।

भीम कहते हैं कि एक भी उपवास नहीं कर सकते और निश्चित रूप से ऐसा एक उपाय पूछते हैं जिससे उनका कल्याण तथा कथा का स्वर्ग-फल हो। यह व्यक्ति की कठिनाई और परिवार के दबाव वाला संवाद है; पाठक की भूख, दवा, भोजन या पानी की जरूरत की उपेक्षा उचित नहीं।

Bhima tells his grandsire that Yudhishthira, Kunti, Drupada's daughter Draupadi, Arjuna, Nakula and Sahadeva never eat on Ekadashi and repeatedly tell him, Vrikodara, not to eat either. His hunger, however, is unbearable. He is ready to give gifts and worship Keshava. Vyasa repeats the statement that those desiring heaven and avoiding hell should not eat on both fortnights' Ekadashis.

Bhima says he cannot manage even one meal, much less fasting. He names the fire in his belly Vrika, which settles only after he eats greatly. Sanskrit ativela is retained as eating greatly, while the English comparison says many times. This mythic fire is not a modern bodily diagnosis.

Unable to perform even one fast, Bhima asks for one definite means to his welfare and the account's heavenly fruit. The exchange includes personal difficulty and family pressure; it does not justify ignoring a reader's hunger, medication, food or water needs.

निर्जल व्रत का स्रोत-वर्णन और फल

KATHA 6.51.19–33

व्यास ज्येष्ठ में वृष या मिथुन की स्थिति पर आने वाली एकादशी को जल-वर्जित उपवास वाला बताते हैं। संस्कृत स्थिति को यहाँ नया राशिचक्र-गणित या तिथि नहीं बनाया गया; अंग्रेज़ी तुलना सूर्य को स्पष्ट करती है। इकाई 20 में गण्डूष और आचमन का अपवाद रखने वाली जल-वर्जना की भाषा है; अंग्रेज़ी तुलना इस जगह थोड़ा जल भी न लेने को कहती है। स्रोत अन्यथा व्रत-भंग भी कहता है; यह कथागत नियम है, स्वास्थ्य के लिए पानी लेने पर दोष नहीं। इस भिन्नता से कोई पीने की मात्रा, अनुमति या स्वास्थ्य-नियम नहीं निकाला गया।

उदय से अगले उदय तक जल-वर्जना के लिए इकाई 21 में बारह द्वादशियों का फल कहा है; आगे पूरे वर्ष

की एकादशियों का फल आता है। बारह को चुपचाप चौबीस नहीं किया गया। द्वादशी की सुबह स्नान, द्विजों को जल और सोना देना तथा ब्राह्मणों के साथ भोजन का क्रम है। यह पूरा कथागत क्रम है, अनिवार्य खर्च, जाति-आधारित पात्रता या निर्जलीकरण की सलाह नहीं।

व्यास कहते हैं कि शंख, चक्र और गदा वाले केशव ने दूसरों को छोड़कर उनकी शरण आने और एकादशी में निराहार रहने की प्रशंसा की थी। कलियुग में द्रव्य-शुद्धि न होने, संस्कार स्मार्त रह जाने और वैदिक संस्कार कठिन होने की चर्चा है। व्यास वायुपुत्र से दोनों पक्षों का नियम दोहराकर ज्येष्ठ शुक्ल निर्जल व्रत को वर्ष के सभी शुक्ल-कृष्ण एकादशी व्रतों जैसा कहते हैं। धन, धान्य, पुत्र, आरोग्य और शुभ फल की प्रशंसा भी है; इनमें से कोई स्वास्थ्य या संतान की गारंटी नहीं।

बड़े, भयावह, काले रूप वाले यमदूत दण्ड और पाश लिए उस व्यक्ति के पास न आने तथा सौम्य पीताम्बरधारी, चक्रहस्त, मन की गति वाले विष्णुदूत अंतकाल में वैष्णवों को विष्णुपुरी ले जाने का आख्यान है। शरीर या रंग से वास्तविक व्यक्ति की बुराई न आँकें। कठोर जल-वर्जना धार्मिक स्रोत की है; Valkala भोजन-पानी रोकना नहीं कहता। पानी, भोजन, सुरक्षित विश्राम और चिकित्सा-निर्देश जारी रखें; निर्जलीकरण के लक्षण हों तो तरल लें और उचित चिकित्सा-सहायता पाएँ।

Vyasa describes Jyeshtha's Ekadashi in the Vrisha or Mithuna position as a water-excluding observance. This wording generates no new zodiac calculation or date; the English comparison explicitly supplies the sun. Unit 20's exclusion language contains a gandusha/achamana exception, whereas the English comparison here excludes even a little water. The source also calls otherwise breaking the vow; that narrative rule does not fault drinking for health. No drinking quantity, permission or health rule is derived from that difference.

For water-exclusion from one rising to the next, unit 21 gives the fruit of twelve Dwadashis; later the whole year's Ekadashis are invoked. Twelve is not silently changed to twenty-four. Dwadashi morning brings bathing, giving water and gold to dvijas and eating with Brahmins. This is the complete narrative sequence, not compulsory spending, caste eligibility or advice to become dehydrated.

Vyasa says conch-, disc- and mace-bearing Keshava praised leaving others, taking refuge in him and not eating on Ekadashi. Discussion follows of absent material purity in Kali Yuga, Smarta rites remaining and difficulty of Vaidika rites. Addressing Vayu's son, Vyasa repeats both fortnights' rule and equates Jyeshtha's bright waterless observance with all bright and dark Ekadashis of the year. Wealth, grain, sons, health and auspiciousness are praised; none is a health or fertility guarantee.

The account describes large, fierce, dark-formed Yama messengers with staff and noose not approaching that person, while gentle yellow-clad, disc-bearing Vishnu messengers moving at thought's speed take Vaishnavas to Vishnu's city at life's end. Neither body nor colour measures an actual person's goodness. Strict water-exclusion belongs to the religious source; Valkala does not instruct withholding food or water. Continue water, food, safe rest and medical guidance; take fluids for dehydration symptoms and obtain appropriate medical help.

संकल्प का संदर्भ, दान और कठोर फल-वचन

KATHA 6.51.34–46

व्यास जलधेनु देने, उपवास और हरि-पूजा से पाप शांत होने की प्रशंसा करते हैं। इकाइयों 35–36 में स्वप्न, अपराध, दन्तरागतया और अगले दिन भोजन का संकल्प-वाक्य है। दन्तरागतया का आशय इस संस्करण में स्पष्ट नहीं; अंग्रेज़ी तुलना बाण की नोक जितना राग और पाप न करने का अलग अर्थ देती है। यहाँ उस अर्थ को निश्चित नहीं बनाया गया, न अस्पष्ट संकल्प को अलग उपयोग का मंत्र दिया गया। पूरे वाक्य का संदर्भ अगले दिन भोजन और व्रत है।

श्रद्धा और संयम के साथ स्त्री या पुरुष के मेरु-मन्दर जैसे पाप भस्म होने का फल-वचन है। जलधेनु न दे सकने वाले के लिए सोने और वस्त्र सहित घट का स्रोत-विकल्प है। जलधेनु का पदार्थ और विधि यहाँ नहीं बनाई गई; अंग्रेज़ी तुलना इस स्थान पर वस्तु का नाम छोड़ती है। जल-नियम के प्रत्येक याम में करोड़ सुवर्ण का फल, स्नान, दान, जप और होम के अक्षय होने की प्रशंसा कृष्ण की कही बताई गई है। याम को नई घड़ी-सीमा या खर्च की दर नहीं बनाया गया।

विष्णु-पद मिलने और सोना, अन्न, वस्त्र देने के अक्षय फल का वर्णन है। एकादशी में अन्न खाने को पाप खाना कहने, चाण्डाल होने और मृत्यु के बाद दुर्गति की कठोर भाषा भी है। यह स्रोत का ऐतिहासिक जातिगत अपमान है, समर्थन नहीं: भोजन करने या जाति के कारण किसी का मान कम नहीं होता। ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी में दान से परम पद तथा ब्रह्महत्या, मद्य-पान, चोरी, गुरु-द्वेष और निरन्तर झूठ जैसे दोषों से मुक्ति की प्रशंसा आती है। गुरु-द्वेष को किसी दूसरी कथा का गुरु-पत्नी प्रसंग नहीं बनाया गया।

व्यास आगे निर्जला-दिन स्त्रियों और पुरुषों के श्रद्धापूर्वक दान का विशेष वर्णन सुनने को कहते हैं। सारे फल-वचन धार्मिक विश्वास हैं; धन, चिकित्सा, न्याय या हानि के सुधार के बदले उपवास अथवा खरीद का लेन-देन नहीं। अस्पष्ट संस्कृत को अनुमान से नया व्यवहार-नियम नहीं बनाया गया।

Vyasa praises giving jaladhenu, fasting and worshipping Hari as quieting wrongdoing. Units 35–36 contain a vow statement mentioning dreams, offence, dantaragataya and eating the next day. Dantaragataya is unclear in this edition; the English comparison supplies passion as small as an arrow-tip and a claim of not having sinned. That interpretation is not made certain here, nor is the uncertain vow extracted as a usable mantra. Its whole context concerns the vow and next-day food.

With faith and restraint, wrongdoing by women or men as great as Meru and Mandara is praised as reduced to ash. For someone unable to give jaladhenu, the source offers a pitcher with gold and cloth. No composition or procedure for jaladhenu is invented; the English comparison omits the object's name here. Each yama of water-restriction is praised with the fruit of a crore of gold, while bathing, gifts, chanting and homa receive enduring merit, attributed to Krishna's words. Yama is not turned into a new clock interval or spending rate.

The source praises reaching Vishnu's station and enduring merit from gold, food or cloth. It also harshly calls eating on Ekadashi eating wrongdoing, becoming a chandala and facing misfortune after death. This is historical caste-based insult, not endorsement: food or caste does not reduce someone's dignity. Gifts on Jyeshtha's bright Dwadashi are praised as leading to the highest station, and release is described for brahmahatya, drinking alcohol, theft, hostility to one's teacher and persistent lying. Guru-dvesha is not replaced with another story's teacher-wife episode.

Vyasa then asks Bhima to hear special faithful giving by women and men on Nirjala day. All such benefits are religious beliefs, not transactions substituting fasting or purchases for wealth, treatment, justice or practical repair. Unclear Sanskrit is not guessed into new conduct rules.

पूरा दान-वर्णन और श्रवण का फल

KATHA 6.51.47–56

जलशायी की पूजा का वर्णन है—यह जल में शयन करने वाले विष्णु का संदर्भ है, किसी व्यक्ति को पानी में लेटाने का निर्देश नहीं। जलमयी धेनु, वास्तविक गाय या घृतधेनु के स्रोत-विकल्प आते हैं; उनके निर्माण, खरीद या पशु-हस्तांतरण की विधि यहाँ नहीं दी जाती। पर्याप्त दक्षिणा और अलग-अलग मिष्टान्न से द्विजों को प्रसन्न करने तथा उनके प्रसन्न होने पर हरि से मोक्ष की धार्मिक प्रशंसा है।

व्रत न करने वालों के लिए आत्म-द्रोह, बुरा आचरण और ठगे जाने जैसे कठोर शब्द हैं। शांत, संयमी, दानशील, हरि-पूजक और रात में जागने वालों के साथ सौ पूर्व और सौ आने वाले कुल वासुदेव के मन्दिर जाने का फल-वचन है। स्रोत कुल कहता है; अंग्रेज़ी तुलना परिवार के सदस्यों के रूप में देती है। कथागत संख्या न बदली गई, न उससे किसी परिवार की दशा या पूर्वजों का निर्णय निकाला गया। जागरण और व्रत न करने पर अपमान यहाँ अनिवार्य नहीं।

अन्न, वस्त्र, गाय, जल, अच्छी शय्या और आसन, कमण्डलु तथा छत्र की पूरी दान-सूची है। पात्र द्विज को जूते देने वाले का स्वर्ण-यान से स्वर्ग में सम्मान कहा गया है। श्रद्धापूर्वक सुनने और कथा कहने वाले दोनों के स्वर्ग-फल की प्रशंसा भी है। सूर्य पर राहु-ग्रहण के समय सन्निहती में श्राद्ध जैसा फल सुनने से मिलने का कथन है; अंग्रेज़ी तुलना कुरुक्षेत्र कहती है। यहाँ सन्निहती को चुपचाप दूसरी जगह से नहीं बदला गया।

ये ऐतिहासिक दान और फल-वचन हैं, जातिगत पात्रता, अनिवार्य खर्च, पशु-दान, रात्रि-जागरण, ग्रहण-यात्रा या व्यक्तिगत श्राद्ध-विधि की सूची नहीं। किसी के भोजन करने या व्रत छोड़ने को आत्म-द्रोह न कहें; धर्म के नाम पर भय, अपमान या हानि उचित नहीं।

Worship of Jalashayi is described: Vishnu reclining in water is the context, not instructing someone to lie in water. The source offers jalamayi dhenu, an actual cow or ghritadhenu; no construction, purchase or animal-transfer procedure is supplied. Substantial dakshina and different sweet foods please dvijas, and pleasing them is religiously praised as bringing liberation through Hari.

Harsh words for non-observers include self-wronging, bad conduct and being deceived. Calm, restrained, generous worshippers keeping a night vigil are praised as taking a hundred past and a hundred future kulas with themselves to Vasudeva's abode. The source says kula; the English comparison describes family members. The narrative number remains without judging any actual family or ancestor. Vigil and insulting non-observers are not obligations here.

The complete gift list includes food, cloth, cows, water, a good bed and seat, kamandalu and umbrella. Giving shoes to a worthy dvija is praised as honour in heaven with a golden vehicle. Both devoted hearing and telling receive heavenly praise. Hearing is also likened to shraddha at Samnihati during Rahu's eclipse of the sun; the

English comparison says Kurukshetra. Samnihati is not silently replaced with another location.

These historical gift and benefit statements are not a checklist of caste eligibility, compulsory spending, animal gifts, vigils, eclipse travel or personal shraddha procedures. Do not call eating or declining a vow self-wronging; religious fear, humiliation or harm is not justified.

अंतिम विधि-चर्चा और पांडव द्वादशी

KATHA 6.51.57–64

अंतिम चर्चा में दन्तधावन के बाद केशव को प्रसन्न करने के लिए एकादशी में अन्न और आचमन के अलावा जल छोड़ने का नियम-वाक्य है। इकाई 58 का आचमन-अपवाद रखा गया है; इसे अंग्रेज़ी तुलना के पहले जल-वर्जन से मिलाकर नया जल-नियम नहीं बनाया गया। द्वादशी को देवेश त्रिविक्रम की गन्ध, धूप, फूल और सुन्दर वस्त्रों से पूजा का वर्णन है। आगे हृषीकेश, संसार-सागर से पार कराने वाले देव, से जल-कुम्भ देने के द्वारा परम गति की प्रार्थना है। यह पूर्ण स्रोत-संदर्भ का भाव है, निर्जल व्रत कराने वाला अलग मंत्र या नुस्खा नहीं।

व्यास भीम को ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी के जल-वर्जित व्रत और शर्करा सहित जल-कुम्भ विप्रों को देने की प्रशंसा कहते हैं। विष्णु के समीप आनंद का फल, फिर भक्तिपूर्वक कुम्भ देना, विप्रों को खिलाना और स्वयं भोजन करना आता है। द्वादशी को पूरी करने वाला सभी पापों से मुक्त होकर अनामय पद जाता है, ऐसा धार्मिक कथन है; अनामय को यहाँ शरीर के रोग का उपचार नहीं बनाया गया।

अन्त में कहा गया है कि तब से भीम ने यह शुभ एकादशी की और संसार में पांडव द्वादशी नाम प्रसिद्ध हुआ। स्रोत की द्वादशी को चुपचाप एकादशी नाम से नहीं बदला गया; जुड़े उत्सव-पृष्ठ का परम्परागत नाम और तिथि भी नहीं बदले। अलग समापन पद्म महापुराण की पचपन हजार वाली संहिता के उत्तर खंड, उमापति–नारद संवाद में ज्येष्ठ शुक्ल निर्जला एकादशी का अध्याय 51 बताता है। सभी 64 क्रमांकित इकाइयाँ, कृष्ण–युधिष्ठिर का आरम्भ, व्यास–भीम का पूरा उपदेश, दान, संकल्प का संदर्भ और अंतिम भोजन सहित समापन पूरे हैं।

यह सम्पूर्ण चयनित धार्मिक आख्यान का संक्षिप्त मूल पुनर्कथन है, स्वास्थ्य-निर्देश या औपचारिक व्रत-पुस्तिका नहीं। भोजन-पानी, दवाएँ, सुरक्षित नींद और जरूरी सहायता न रोकें। किसी को निर्जल व्रत के लिए मजबूर न करें; अस्वस्थता या निर्जलीकरण के लक्षण हों तो व्रत रोकें, तरल लें और उचित चिकित्सा-सहायता पाएँ। स्वास्थ्य, संतान, धन या पूर्वजों की मुक्ति का निश्चित वादा नहीं है। दीपक वैकल्पिक है; निगरानी रखें और सोने से पहले बुझाएँ। यहाँ नया ज्येष्ठ, राशिचक्र, सूर्योदय, द्वादशी या पारण-समय नहीं निकाला गया।

The final discussion includes a vow statement after cleaning the teeth, for pleasing Keshava, about avoiding food and water apart from achamana on Ekadashi. Unit 58's achamana exception remains; it is not merged with the English comparison's earlier water-exclusion to invent a new rule. Dwadashi worship of Trivikrama with fragrance, incense, flowers and beautiful cloth follows. A prayer then asks Hrishikesha, the deity carrying

one across worldly existence's ocean, for the highest destination through giving a water pitcher. This conveys the whole source context, not a detached mantra or recipe for imposing waterless fasting.

Vyasa praises Jyeshtha's bright waterless observance and giving water pitchers with sugar to vipras. Joy near Vishnu is praised, followed by devoted pitcher gifts, feeding vipras and then eating oneself. Completing Dwadashi is said to remove wrongdoing and lead to an anamaya station; anamaya is not converted into treatment for bodily illness.

The ending says Bhima observed this auspicious Ekadashi thereafter and the name Pandava Dwadashi became known. The source's Dwadashi is not silently renamed Ekadashi, and the linked hub's traditional name and date remain unchanged. The separate colophon identifies chapter 51 as Jyeshtha's bright Nirjala Ekadashi in the Umapati–Narada dialogue of the Padma Mahapurana's fifty-five-thousand collection, Uttara Khanda. All 64 numbered units are covered, including the Krishna–Yudhishthira opening, full Vyasa–Bhima teaching, gifts, vow context and ending with food.

This is an original condensed retelling of the whole selected religious account, not health instructions or a formal vow manual. Do not withhold food, water, medication, safe sleep or needed help. Do not force waterless fasting; if unwell or showing dehydration symptoms, stop fasting, take fluids and obtain appropriate medical help. No health, fertility, wealth or ancestor-release outcome is guaranteed. A lamp is optional; attend it and extinguish it before sleeping. No new Jyeshtha, zodiac, sunrise, Dwadashi or parana time is calculated here.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Nirjala Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.51.1–64, revision 336432, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.